

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिला उत्थान, चेतना का विकास एवं विदुषियों का

योगदान

शीतल मीणा (Ph.D शोधार्थी)

संकाय , इतिहास

शोध केंद्र , शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (संबद्धता)

शोध सार (Abstract):

प्रस्तुत शोध पत्र अध्याय-सप्तमः स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में महिला उत्थान और चेतना का विकास' पर आधारित एक विस्तृत एवं गहन ऐतिहासिक अध्ययन है। इसमें 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 में देश की आजादी तक भारतीय महिलाओं द्वारा निभाई गई बहुआयामी भूमिका का सर्वांगीण विश्लेषण किया गया है। शोध पत्र में यह रेखांकित किया गया है कि किस प्रकार मध्यकालीन सामाजिक बंधनों, पर्दा प्रथा एवं अशिक्षा की स्थिति से निकलकर भारतीय नारियों ने न केवल देश की स्वाधीनता के लिए अभूतपूर्व संघर्ष किया, बल्कि स्वयं के अधिकारों, समानता और सामाजिक उत्थान के लिए भी चेतना जागृत की। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलनों तथा भारत छोड़ो आंदोलन में रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, एनी बेसेंट, सरोजिनी न्द्रवेडू, मैडम भीकाजी कामा, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, अरूणा आसफ अली, भगिनी निवेदिता, सरता देवी, उर्मिला देवी, दुर्गा भाभी, उषा मेहता जैसी अनगिनत विदुषियों के योगदान का प्रामाणिक ऐतिहासिक संदर्भों के साथ विस्तृत विवेचन किया गया है।

1. प्रस्तावना एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन विश्व इतिहास की सबसे अनूठी, प्रेरणादायी और दीर्घकालिक घटनाओं में से एक है। यह आंदोलन केवल ब्रिटिश हुकूमत के राजनीतिक नियंत्रण से मुक्ति का प्रयास भर नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज के पुनर्जागरण, पुनर्निर्माण और मानवीय मूल्यों के पुनर्स्थापन का भी व्यापक महायज्ञ था। इस राष्ट्रीय चेतना के अभ्युदय और प्रसार में देश की नारी शक्ति का योगदान अत्यंत ऐतिहासिक, निर्णायक और क्रांतिकारी रहा है। सदियों से सामाजिक कुरीतियों, जैसे—बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह निषेध, बहुविवाह और अशिक्षा की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतीय नारियों का घर की चारदीवारी से निकलकर स्वाधीनता समर की अग्रिम पंक्ति में खड़े होना एक अप्रत्याशित और दूरगामी सामाजिक क्रांति थी।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुए सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों ने महिलाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण को बदलने की आधारशिला रखी। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले और स्वामी विवेकानंद जैसे महान चिंतकों ने स्त्री शिक्षा और महिला अधिकारों के पक्ष में पुरजोर आवाज उठाई। इसके परिणामस्वरूप, महिलाओं में अपनी अस्मिता, क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति एक नई चेतना का संचार हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभिक दौर जहाँ प्रमुख रूप से पुरुषों द्वारा संचालित था, वहीं 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद धीरे-धीरे महिलाओं की सहभागिता का क्षितिज चौड़ा होता चला गया।

प्रारंभिक चरण में पोलीगर विद्रोह, रानी चेन्नम्मा (किचुर) का ब्रिटिश विरोधी संघर्ष, बुन्देला विद्रोह तथा सन्थाल विद्रोह के रूप में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जो क्षेत्रीय प्रतिरोध शुरू हुए, उनमें स्थानीय महिलाओं ने अपनी पूरी शिद्दत के साथ भागीदारी की। सन्थाल विद्रोह (1855-56) के समय स्थानीय अंग्रेज प्रशासक ने भारत सरकार के गृह-सचिव को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए लिखा था कि 'यह पुनर्जागरण पृथ्वी के उच्छ्वास की तरह उत्पन्न हुआ। कोई दूरदर्शी भी इसका पूर्वानुमान नहीं लगा सकता था क्योंकि यह एक अप्रत्याशित घटना थी।' इस टिप्पणी से यह स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक सत्ता भारतीय जनमानस और विशेषकर महिलाओं के अंदर सुलग रही क्रांति की आग का सही आकलन करने में पूरी तरह असमर्थ रही थी।

2. 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और महिलाओं की प्रारंभिक चेतना

1857 की महान क्रांति भारतीय स्वाधीनता संग्राम का प्रस्थान बिंदु मानी जाती है। इसमें भारतीय नारियों ने न केवल पुरुषों को प्रेरित किया, बल्कि स्वयं हाथ में तलवार थामकर युद्ध भूमि में अंग्रेजों को छठी का दूध याद दिला दिया। इस संदर्भ में अवध की बेगम हजरत महल और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का योगदान अमर और स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

2.1 बेगम हजरत महल का ऐतिहासिक नेतृत्व

सन् 1856 में जब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने 'व्यपगत का सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) और कुशासन का बहाना बनाकर अवध का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया, तो यह अवध के शाही परिवार तथा वहाँ की जनता के लिए एक गहरा मानसिक और राजनीतिक धक्का था। अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को लखनऊ छोड़कर कलकत्ता जाने के लिए विवश किया गया। किंतु बेगम हजरत महल, जिनके सीने में अन्याय और अपमान के घाव अभी हरे थे, ने लखनऊ छोड़कर जाने से साफ इनकार कर दिया।

30 मई 1857 ई. को जब लखनऊ में क्रांति का श्रीगणेश हुआ, तो बेगम हजरत महल ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। उन्होंने अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कदर को अवध के सिंहासन पर बैठाया और स्वयं उसकी संरक्षिका बनकर एक कुशल राजनीतिज्ञ की भांति राज्य का सफल नेतृत्व किया। बेगम निरंतर दरबार लगाती थीं, सेनापतियों, अफसरों और सिपाहियों का मनोबल ऊँचा रखती थीं। उनका स्पष्ट और निडर दृष्टिकोण था कि 'अंग्रेजों का कैदी बनने से बेहतर है कि हम आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए अपने प्राण देश पर न्यौछावर कर दें।' उन्होंने लखनऊ के अंतिम पतन तक अंग्रेजों की आधुनिक सेना का डटकर मुकाबला किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वाभिमान का एक नया मानक स्थापित किया।

2.2 रानी लक्ष्मीबाई और 'लड़ो और मरो' का अमर संकल्प

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई 1857 की क्रांति की सबसे प्रदीप्त मणिकर्णिका थीं। लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति के तहत जब झाँसी के अंग्रेजी राज्य में विलय का फरमान जारी हुआ, तो रानी लक्ष्मीबाई ने निर्भीकता से ऐलान किया—'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।' 5 जून 1857 को झाँसी में क्रांति का खुला बिगुल बजा। रानी ने केवल सैनिकों का ही नेतृत्व नहीं किया, बल्कि अपनी महिला सहयोगियों (झलकारी बाई, मुंदर, जूही आदि) को संगठित कर एक सशक्त महिला सैनिक दस्ता तैयार किया और अंग्रेजों के विरुद्ध भीषण युद्ध छेड़ दिया।

अंग्रेज इतिहासकार बॉल चार्ल्स ने रानी की सुरक्षा व्यवस्था की सराहना करते हुए लिखा है: 'रानी ने अपनी शक्ति भर अपने राज्य को बचाने का निश्चय कर लिया था, जिस समय झाँसी पर अधिकार किया गया, उस समय कोई भी कमी उसकी सुरक्षा में नजर नहीं आती थी।' वहीं ब्रिटिश सैन्य इतिहासकार मैलसन ने रानी के अमर बलिदान पर लिखा: 'युद्ध भूमि में 'लड़ों और मरो' की शपथ जो रानी ने ली थी, वह आने वाले युग के लिए एक प्रेरणा बन गयी। उसे देशवासी सदा याद रखेंगे कि वह देश के लिए जीवित रहीं और देश पर मर मिट गयी।' 1857 के विद्रोह को भले ही अंग्रेजों ने क्रूरतापूर्वक दबा दिया, लेकिन इस क्रांति ने भारतीय महिलाओं के मन में स्वतंत्रता की जो चिंगारी सुलगाई, वह आने वाले दशकों में एक दावानल बन गई।

3. स्वदेशी आंदोलन, बंग-भंग और राजनीतिक जागृति (1905-1919)

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में 1905 का बंगाल विभाजन (बंग-भंग) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में एक मोड़ साबित हुआ। कर्जन के इस साम्राज्यवादी निर्णय ने 'स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन' को जन्म दिया। 1905 से 1919 के बीच कांग्रेस के भीतर उग्रवाद (चरमपंथ) का विकास हुआ और इसी काल में क्रांतिकारी गतिविधियों का भी उभार हुआ। इस संपूर्ण अवधि में भारतीय स्त्रियों ने अभूतपूर्व उत्साह के साथ राजनीति में सक्रिय भागीदारी की।

बंगाल विभाजन के विरोध में 16 अक्टूबर 1905 को विभाजन दिवस के रूप में मनाया गया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के आह्वान पर लोगों ने एक-दूसरे की कलाई पर 'राखी' बाँधकर राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया और शोक स्वरूप घरों में चूल्हे नहीं जलाए। 1905 के इस बंग-भंग विरोधी आंदोलन में लगभग 5000 महिलाओं ने हिस्सा लिया। महिलाओं ने 'राखी बाँधने' और 'रसोई न बनाने' का जो बहिष्कार का नारा दिया, वह तत्कालीन बंद और रूढ़िवादी समाज के हिसाब से अत्यंत क्रांतिकारी कदम था। महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों तथा चूड़ियों का बहिष्कार किया और घर-घर जाकर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का प्रचार किया।

3.1 महिला संगठनों की स्थापना और 'भारती' का प्रभाव

इस काल में महिलाओं को संगठित करने तथा उनमें आत्मनिर्भरता और देशभक्ति की भावना भरने के लिए कई महिला संगठनों और पत्र-पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रवीन्द्रनाथ टैगोर की बहन स्वर्णकुमारी देवी ने 1886 में 'साखी समिति' नामक संगठन स्थापित किया। इसका उद्देश्य असहाय एवं विधवा महिलाओं को आश्रय, शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण देना था ताकि वे आत्मनिर्भर बनकर समाज और शिक्षा के प्रसार में योगदान दे सकें। स्वर्णकुमारी देवी ने महिला शिल्प मेलों का भी आयोजन किया, जहाँ भारतीय महिलाओं द्वारा तैयार हस्तशिल्प की बिक्री की जाती थी। इसका दोहरा उद्देश्य था—साखी समिति के लिए धन जुटाना और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर 'स्वदेशी' को व्यावहारिक आधार प्रदान करना।

वर्ष 1900 में कलकत्ता में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने वाली स्वर्णकुमारी देवी पहली भारतीय महिला थीं। वे प्रसिद्ध बांग्ला पत्रिका 'भारती' की प्रथम संपादिका भी थीं, जिसके माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय चेतना और महिला उत्थान का विचार जन-जन तक पहुँचाया।

3.2 क्षेत्रीय सहभागिता और उग्रवादी दौर की महिलाएँ

उत्तर बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान सुधारानी चौधरानी ने क्रांतिकारियों और कांग्रेसी नेताओं को अपने घर में शरण देकर आंदोलन को मजबूती प्रदान की। सुरेन्द्रबाला राय, महारानी सुनीति देवी, गायत्री देवी और इमा राय (जो अनुशीलन समिति से जुड़ी थीं) ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। जलपाईगुड़ी कांग्रेस महिला समिति की प्रथम अध्यक्ष सुभाषनी घोष, श्रीमती अम्बुजा सुन्दरी, लुफतर रहमान और हेलन लेपचा का योगदान भी उल्लेखनीय है। महात्मा गांधी ने हेलन लेपचा के निस्वार्थ सेवा भाव से प्रभावित होकर उन्हें 'सावित्री देवी' का नाम दिया था। सावित्री देवी को सिलीगुड़ी में एक ओजस्वी भाषण देने के कारण गिरफ्तार किया गया और तीन महीने की कैद की सजा सुनाई गई।

पश्चिम भारत में यद्यपि महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम थी, फिर भी 6 अक्टूबर 1905 को पूना के शनिवार पेठ स्थित नाथ मंदिर में पार्वती बापत की अध्यक्षता में 120 उच्चवर्गीय ब्राह्मण स्त्रियाँ 'हल्दी-कुमकुम' के पार पारंपरिक त्यौहार पर एकत्र हुईं। वहाँ सरस्वती भानु तथा कुमारी भातखंडे ने 'स्वदेशी' पर अपने निबंध पढ़े और उपस्थित स्त्रियों ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया कि वे अब से यूरोपीय निर्मित वस्त्र, काँच की चूड़ियाँ और विदेशी सामान कभी नहीं खरीदेंगी।

इसी प्रकार, 24 अगस्त 1907 को जब विवेकानंद के भाई भूपेन्द्रनाथ दत्ता को क्रांतिकारी विचारों के लिए गिरफ्तार किया गया, तो कलकत्ता में 200 से अधिक महिलाओं ने एक विशाल सभा आयोजित कर श्री दत्ता के प्रति सम्मान व्यक्त किया, उनके हस्ताक्षर युक्त पत्र उनकी माता को सौंपा और मुकदमे के कानूनी खर्च के लिए स्वेच्छा से धन और गहने दान किए।

4. गांधीवादी युग और जन-आंदोलनों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी

1915-16 में महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। गांधी जी ने यह भली-भांति समझ लिया था कि देश की आधी आबादी (महिलाओं) को शामिल किए बिना कोई भी राष्ट्रव्यापी आंदोलन सफल नहीं हो सकता। गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय महिलाओं ने अपनी असीम आंतरिक शक्ति, सहनशीलता और नैतिक क्षमता को पहचाना। उनके आह्वान पर असूर्य पश्या नारियाँ घर की चारदीवारी और घूँघट को छोड़कर सत्याग्रह के मैदान में कूद पड़ीं।

4.1 रोलेट सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन (1920-22) और स्वदेशी का प्रचार

असहयोग आंदोलन (1920-21) के दौरान महिलाओं की सहभागिता का अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिला। बंगाल में देशबंधु चित्तरंजन दास की पत्नी वासंती देवी, बहन उर्मिला देवी और सुनीति देवी (जिन्होंने कामकाजी महिलाओं के लिए 'नारी कर्म मंदिर' स्थापित किया था) ने सड़कों पर निकलकर खदूर (खादी) बेचने और विदेशी सामान के बहिष्कार का व्यापक अभियान चलाया। गैर-कानूनी सभाएँ करने और खदूर बेचने के आरोप में जब वासंती देवी और उनके साथियों को गिरफ्तार किया गया, तो इसका जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

अमृत बाजार पत्रिका ने इस घटना पर टिप्पणी करते हुए लिखा: 'वासंती देवी की गिरफ्तारी का लोगों पर विद्युत वेग से असर पड़ा। इसके फौरन बाद एक हजार पुरुषों ने अपनी गिरफ्तारी के लिए स्वयं को पेश कर दिया।' इस आंदोलन

में बंगाल की मोहिनी देवी, सुशीला देवी, चारुशिला देवी, नेली सेन गुप्ता, आशालता सेन और प्रभा चटर्जी ने भी धरने दिए और जेल यात्राएँ कीं। उड़ीसा में आंदोलन की कमान रमा देवी चौधरी ने संभाली।

पंजाब और लाहौर में श्रीमती लज्जावती और लाड़ो रानी जुत्शी ने महिलाओं को संगठित किया। लज्जावती ने मुख्य रूप से मध्यवर्गीय और अशिक्षित महिलाओं में देशभक्ति का जज्बा भरा। महिलाएँ हाथ में खादी और चरखा लेकर गलियों में जुलूस निकालती थीं और विदेशी कपड़ों की होली जलाती थीं। लाड़ो रानी जुत्शी की पुत्रियों ने एक रोचक संस्मरण सुनाया कि जुलूस में चलने वाली महिलाएँ नंगे पैर चलना पसंद करती थीं ताकि तेज चल सकें; इसलिए लाड़ो रानी दो-तीन स्वयंसेविकाओं को थैला देकर पीछे लगा देती थीं ताकि छोड़ी गई चप्पलों को एकत्र कर कांग्रेस कार्यालय में रखा जा सके और जुलूस के बाद महिलाएँ अपनी चप्पलें ले सकें। यह छोटी सी घटना उस दौर की महिलाओं में अनुशासन और संगठन कौशल का जीवंत प्रमाण है।

1921 के कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में 145 महिला प्रतिनिधि शामिल हुईं, जिनमें से 131 महिलाएँ स्वयंसेविकाएँ थीं और 14 विषय समिति की सदस्या थीं। 1922 में बसंती देवी ने चटगांव में संपन्न प्रांतीय कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की। 1923 के काँकीनाड़ा अधिवेशन में दुर्गाबाई देशमुख के नेतृत्व में एक विशेष 'बालिका कार्यकर्ता कोर' की स्थापना की गई।

4.2 नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

12 मार्च 1930 को जब गांधी जी ने दांडी यात्रा शुरू की, तो प्रारंभ में उन्होंने 71 यात्रियों के अपने दल में किसी महिला को शामिल नहीं किया था। गांधी जी का मानना था कि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में महिलाओं को आगे रखकर पुरुष अपनी कमजोरी न छिपाएँ। परंतु इस निर्णय से राष्ट्रवादी महिलाओं में गहरा आक्रोश उत्पन्न हुआ। दादाभाई नौरोजी की पोत्री खुरशीद बेन ने गांधी जी को कड़ा पत्र लिखा। 'स्त्री धर्म' की संपादिका मारग्रेट कजिन्स और कमला देवी चट्टोपाध्याय ने गांधी जी से भेंट की और महिलाओं को इस ऐतिहासिक आंदोलन में भाग लेने का पूर्ण अधिकार देने का आग्रह किया। गांधी जी ने उनकी तर्कपूर्ण माँग को स्वीकार किया और महिलाओं से नमक कानून तोड़ने का विशेष आह्वान किया।

6 अप्रैल 1930 को नमक सत्याग्रह के पहले दिन कमला देवी चट्टोपाध्याय ने अपने ऐतिहासिक भाषण में इसे एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू और मारग्रेट कजिन्स की लय में एक अत्यंत यादगार क्षण बताया। उन्होंने कहा: 'हाँलाकि नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए कुछ ही महिलाओं का औपचारिक चयन हुआ है, परन्तु इसके माध्यम से भारतीय क्रांति ने 6 अप्रैल 1930 की सुबह पहली अंगड़ाई ली है जो कि शाम ढलते-ढलते सम्पूर्ण देश में एक विशाल आन्दोलन के रूप में फैल गई है।'

नमक सत्याग्रह के दौरान देश भर में लाखों महिलाओं ने समुद्र तटों, नदियों के किनारे और चौराहों पर अवैध नमक बनाया। वे नमक की छोटी-छोटी पुड़ियाँ लेकर सड़कों पर चिल्लाती थीं—'हमने नमक कानून तोड़ दिया है और अब हम आजाद हैं! है कोई आजादी का नमक खरीदने वाला?' अगस्त 1930 में डॉ. हंसा मेहता ने मूसलाधार बारिश की परवाह किए बिना बंबई में एक विशाल जुलूस का नेतृत्व किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान केवल बंबई में ही नहीं बल्कि पूरे देश में महिलाओं ने शराब, अफीम और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर चौबीसों घंटे पिकेटिंग (धरना) दी। 15 नवंबर 1930 तक दर्ज सरकारी आंकड़ों के अनुसार, केवल सविनय अवज्ञा आंदोलन में 369 महिलाएँ

औपचारिक रूप से जेलों में बंद थीं, जबकि कुल मिलाकर हजारों महिलाओं ने गिरफ्तारियाँ दी थीं। अकेले दिल्ली में 1600 से अधिक महिलाओं को गिरफ्तार किया गया था।

4.3 भारत छोड़ो आंदोलन (1942) और महिलाओं का आक्रामक नेतृत्व

9 अगस्त 1942 को जब 'भारत छोड़ो आंदोलन' का ऐलान होते ही ब्रिटिश सरकार ने ऑपरेशन जीरो आवर के तहत कांग्रेस के सभी शीर्ष नेताओं (गांधी जी, नेहरू, पटेल आदि) को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया, तो आंदोलन का नेतृत्व स्वतः ही जनता और विशेषकर महिलाओं के हाथों में आ गया। इस आंदोलन में महिलाओं ने जो अदम्य साहस, वीरता और नेतृत्व क्षमता दिखाई, उसने ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी।

बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में पुलिस की संगीनों और गोलियों की धमकी को दरकिनार करते हुए 33 वर्षीया अरुणा आसफ अली ने निडरतापूर्वक राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया और आंदोलन का बिगुल फूंक दिया। इसके बाद वे भूमिगत हो गईं और अच्युत पटवर्धन व राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर गुप्त रूप से आंदोलन का संचालन किया।

इसी आंदोलन के दौरान डॉ. उषा मेहता ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर बंबई में एक 'गुप्त कांग्रेस रेडियो' (Underground Radio) की स्थापना की। यह रेडियो स्टेशन प्रतिदिन निष्पक्ष समाचार, गांधी जी का संदेश और राष्ट्रवादियों के निर्देश प्रसारित करता था, जिससे अंग्रेजी सरकार बौखला गई थी। उषा मेहता को बाद में गिरफ्तार कर लिया गया और कड़ी मानसिक यातनाएँ दी गईं, किंतु उन्होंने अपने साथियों का नाम उजागर नहीं किया।

असम में 13 वर्षीया बालिका कनकलता बरुआ ने हाथ में तिरंगा लेकर जुलूस का नेतृत्व किया और गोहपुर पुलिस स्टेशन पर झंडा फहराने के प्रयास में अंग्रेजों की गोली का शिकार होकर शहादत प्राप्त की। बंगाल के मेदिनीपुर (तमलुक) में 73 वर्षीया वयोवृद्ध मातंगिनी हाजरा (जिन्हें 'प्यार से 'गांधी बूढ़ी' कहा जाता था) ने जुलूस का नेतृत्व करते हुए सीने पर गोलियाँ खाईं, लेकिन गिरते-गिरते भी राष्ट्रीय ध्वज को मिट्टी में नहीं मिलने दिया। सुचेता कृपलानी ने भूमिगत रहकर 'महिला विभाग' का गठन किया और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया।

5. क्रांतिकारी आंदोलन, मजदूर वर्ग एवं विदेशी धरती पर वीरांगनाएँ

स्वतंत्रता आंदोलन की केवल अहिंसक धारा ही नहीं, बल्कि सशस्त्र क्रांतिकारी धारा में भी भारतीय महिलाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर ऐतिहासिक भूमिका निभाई। बंदूकों की आपूर्ति, गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान, क्रांतिकारियों को आश्रय देना और प्रत्यक्ष सशस्त्र हमलों में भाग लेना उनकी अदम्य वीरता का परिचायक था।

5.1 प्रमुख महिला क्रांतिकारी

1. मैडम भीकाजी कामा: विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता की अलख जगाने वाली मैडम कामा क्रांतिकारी आंदोलन की माता मानी जाती हैं। 1907 में जर्मनी के शट्टगार्ट (Stuttgart) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में उन्होंने भारत का प्रथम राष्ट्रीय झंडा (हरा, पीला, लाल) फहराया और विश्व समुदाय के सामने भारत की आजादी का ऐतिहासिक प्रस्ताव रखा। 1909 में उन्होंने जेनेवा से 'वंदे मातरम्' नामक समाचार पत्र निकाला, जिसमें स्वाधीनता के तीन चरण—शिक्षा, युद्ध और पुनर्निर्माण का त्रिस्तरीय फार्मूला प्रस्तुत किया गया।

2. दुर्गा भाभी (दुर्गावती देवी): पंजाब के प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा की पत्नी दुर्गा भाभी का नाम क्रांतिकारी इतिहास में अमर है। सांडर्स वध के बाद भगत सिंह को सुरक्षित लाहौर से निकालने में उन्होंने भगत सिंह की छद्म पत्नी बनकर अद्भुत साहस का परिचय दिया। उन्होंने क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता दी, हथियार पहुँचाए और शेडों में बम बनाने का कार्य भी किया।
3. प्रीतिलता वाद्देदार और बीना दास: बंगाल के चटगांव शस्त्रागार छापे (1930) के नायक सूर्य सेन (मास्टर दा) की शिष्या प्रीतिलता वाद्देदार ने 24 सितंबर 1932 को 'पहाड़तली यूरोपीय क्लब' पर एक सशस्त्र हमले का सफल नेतृत्व किया। अंग्रेजों द्वारा घिर जाने पर उन्होंने जीवित पकड़े जाने के बजाय पोटेशियम सायनाइड खाकर आत्मबलिदान दे दिया। वहीं बीना दास ने 1932 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में डिग्री लेते समय बंगाल के गवर्नर स्टेनली जैक्सन पर बिल्कुल करीब से गोलियाँ चला दी थीं।
4. सुनीति चौधरी और शांति घोष: 1931 में कोमिला (त्रिपुरा) की दो स्कूली छात्राओं—सुनीति चौधरी और शांति घोष ने जिला मजिस्ट्रेट स्टीवेंस को उसके चैंबर में जाकर गोली मार दी थी। इस घटना ने साबित कर दिया कि भारत की छोटी बच्चियों के अंदर भी औपनिवेशिक दासता के खिलाफ कितनी भीषण ज्वाला सुलग रही थी।

5.2 आजाद हिंद फौज (INA) और रानी झाँसी रेजीमेंट

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जब 1943 में दक्षिण-पूर्व एशिया में 'आजाद हिंद सरकार' और 'आजाद हिंद फौज' का पुनर्गठन किया, तो उन्होंने विश्व इतिहास में पहली बार केवल महिलाओं की एक सशस्त्र सैन्य टुकड़ी का गठन किया, जिसका नाम 'रानी झाँसी रेजीमेंट' रखा गया। डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन (कैप्टन लक्ष्मी सहगल) को इस रेजीमेंट का सर्वसम्मति से कमांडर बनाया गया।

दक्षिण-पूर्व एशिया (सिंगापुर, मलय, बर्मा) में रहने वाली भारतीय मूल की हजारों युवतियों ने अपनी सुख-सुविधाएँ त्यागकर इस सैन्य टुकड़ी में प्रवेश लिया। उन्हें कड़ा सैन्य प्रशिक्षण दिया गया, उन्होंने बंदूकों और संगीनों से लैस होकर बर्मा के जंगलों में ब्रिटिश सेना के खिलाफ प्रत्यक्ष युद्ध लड़ा। रंगून में रहने वाली श्रीमती हेमराज बटाई ने अपनी संपूर्ण व्यक्तिगत संपत्ति आजाद हिंद फौज के कोष में दान कर दी थी, जिसके लिए नेताजी ने उन्हें 'सेवक-ए-हिंद' की उपाधि से अलंकृत किया था।

5.3 किसान, मजदूर और वामपंथी महिला संघर्ष

राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ समाज के निचले और शोषित वर्ग—किसानों और मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई में भी महिलाओं की आक्रामक भूमिका रही। 1928-29 की बम्बई कपड़ा मिल मजदूर हड़ताल के दौरान महिला कामगारों को जुलूसों की अग्रिम पंक्ति में रखा गया। हड़ताल के दौरान महिलाएँ हाथों में झाड़ू लेकर मिलों के फाटकों पर खड़ी हो जाती थीं। यदि कोई मजदूर हड़ताल तोड़कर अंदर जाने का प्रयास करता, तो पहले वे उसे प्यार से समझाती थीं और न मानने पर झाड़ू से पीटने में भी नहीं हिचकिचाती थीं।

प्रभावती मिर्जा ने कलकत्ता में सफाई कर्मचारियों (मेहतरों) को संगठित कर 1928 में ऐतिहासिक हड़ताल आयोजित की। इसमें महिला सफाई कर्मचारियों ने पुलिसकर्मियों पर गंदगी फेंककर अपना विरोध जताया और यह साबित किया कि जिसे समाज घटिया काम समझता है, उसे शोषण के खिलाफ एक मारक हथियार भी बनाया जा सकता है।

इसके अलावा संतोष कुमारी गुप्ता, सकीना बेगम, सुधा राय, डॉ. मैत्रेयी बोस, विमल प्रतिभा देवी और सुकुमारी चौधरी ने महिला श्रमिकों के अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया।

6. राष्ट्रीय आंदोलन में भारतीय विदुषियों का विशेष योगदान (व्यक्तिगत वृत्त)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अनेक ऐसी विदुषी नारियाँ हुईं, जिन्होंने अपनी बौद्धिक प्रतिभा, वाक्पटुता, संगठनात्मक क्षमता और लेखन कला के बल पर राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक दिशा और नैतिक बल प्रदान किया। प्रस्तुत अध्याय में चर्चित प्रमुख विदुषियों का विशद विवरण निम्नवत है:

क्र.सं.	विदुषी / नेता का नाम	मुख्य संगठन / क्षेत्र	प्रमुख योगदान एवं ऐतिहासिक कार्य
1	श्रीमती एनी बेसेंट	होम रूल लीग (1916), थियोसोफिकल सोसाइटी	1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं; 'न्यू इंडिया' व 'कॉमनवील' पत्रों द्वारा स्वराज्य का संदेश दिया।
2	सरोजिनी नायडू	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, महिला सत्याग्रह	'भारत कोकिला'; 1925 में कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष; नमक सत्याग्रह व गोलमेज सम्मेलन में सहभागिता।
3	सरला देवी चौध रानी	भारत स्त्री महामंडल (1910), साखी समिति	पंजाब व बंगाल के क्रांतिकारियों में संपर्क स्थापित किया; 1904 में कांग्रेस में 'वंदे मातरम्' का गायन किया।
4	भगिनी निवेदिता	अधोरी कामिनी समिति, स्वदेशी प्रचार	स्वामी विवेकानंद की शिष्या; अकाल व बाढ़ में राहत कार्य; पर्दा प्रथा में रहने वाली महिलाओं में चरखा व स्वदेशी का प्रचार।
5	कस्तूरबा गांधी	गुजरात प्रदेश कांग्रेस, स्वदेशी आंदोलन	गांधी जी की सहधर्मिणी; छुआछूत निवारण, महिला सेवादल और विदेशी माल के बहिष्कार आंदोलनों का कुशल नेतृत्व।
6	मैडम भीकाजी कामा	इण्डिया हाउस, जिनीवा क्रांति गुट	1907 में जर्मनी में भारत का प्रथम राष्ट्रीय ध्वज फहराया; 'वंदे मातरम्' पत्रिका का संपादन किया।

7	कमला नेहरू	इलाहाबाद कांग्रेस, स्वदेशी पिकेटिंग	इलाहाबाद में स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार, कर-बंदी आंदोलन और शराब की दुकानों पर सफल पिकेटिंग का नेतृत्व किया।
8	कमलादेवी चट्टोपाध्याय	ऑल इंडिया वूमेन्स कॉन्फ्रेंस, नमक सत्याग्रह	गांधी जी को नमक सत्याग्रह में महिलाओं को शामिल करने के लिए सहमत किया; खादी हस्तशिल्प का पुनरुद्धार।
9	श्रीमती अरुणा आसफ अली	दिल्ली कांग्रेस, अंडरग्राउंड मूवमेंट	1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में ग्वालिया टैंक मैदान पर तिरंगा फहराया; भूमिगत होकर आंदोलन संचालित किया।
10	डॉ. उषा मेहता	कांग्रेस गुप्त रेडियो बंबई	1942 में बंबई में भूमिगत रेडियो स्टेशन स्थापित कर राष्ट्रवादी समाचारों और निर्देशों का प्रसारण किया।

6.1 श्रीमती एनी बेसेंट और होम रूल आंदोलन

थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्षा श्रीमती एनी बेसेंट का 1893 में भारत आगमन भारतीय इतिहास की एक युगगामी घटना थी। 1914 में उन्होंने 'कॉमनवील' और 'न्यू इंडिया' समाचार पत्रों के माध्यम से देश में स्वराज्य और राष्ट्रीयता का अलख जगाया। 1916 में उन्होंने आयरिश होम रूल की तर्ज पर भारत में 'होम रूल लीग' की स्थापना की। एनी बेसेंट ने अपनी ओजस्वी वक्ताओं से भारतीय समाज को झकझोरा। उन्होंने कहा था: 'अदम्य वीरता, सहनशीलता तथा आत्मबलिदान के स्त्री के नैसर्गिक गुणों से ओतप्रोत स्त्रियों की बड़ी संख्या में हमारी सहायता के लिए आगे आने से होमरूल आन्दोलन की ताकत दस गुना बढ़ गई है।'

1917 में कलकत्ता में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता चुनकर एनी बेसेंट कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। महात्मा गांधी ने उनके योगदान का स्मरण करते हुए कहा था: 'श्रीमति बिसेन्ट ने भारत की जो गरिमापूर्ण सेवाएँ की हैं, उनकी स्मृति तब तक सजीव रहेगी जब तक स्वयं भारत राष्ट्र के शरीर में प्राणों का स्पंदन रहेगा।'

6.2 श्रीमती सरोजिनी नायडू: 'भारत कोकिला'

अपनी सुमधुर कविताओं और अद्भुत भाषण कला के लिए 'भारत कोकिला' (Nightingale of India) के नाम से विख्यात सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक महान स्तंभ थीं। 1917 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने घोषणा की थी: 'भारत का स्त्रीत्व आपके ध्वजवाहकों एवं शक्ति संबल के रूप में आपके साथ होगा और यदि आप मर भी जाते हैं तो याद रखिए चित्तौड़ की पद्मिनी की भावना के सदृश भारत के पुरुषों के दिलों में आपका सम्माननीय स्थान होगा।'

1925 में कानपुर कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करके वे कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनीं। 1930 के नमक सत्याग्रह के दौरान जब गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया, तो सरोजिनी नायडू ने गुजरात के धरसाणा (Dharasana) नमक कारखाने पर अहिंसक सत्याग्रह का ऐतिहासिक नेतृत्व किया, जहाँ ब्रिटिश पुलिस की बर्बर लाठीचार्ज के सामने सत्याग्रहियों ने अद्वितीय धैर्य का परिचय दिया। वे द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) में गांधी जी के साथ लंदन गईं और स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल बनीं।

6.3 सरला देवी चौध रानी और 'भारत स्त्री महामंडल'

सरला देवी चौध रानी 20वीं शताब्दी के मातृ-केंद्रित राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी चेतना की प्रमुख सूत्रधार थीं। 1904 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने मंच से 'वंदे मातरम्' गाकर पूरे देश में एक नई ऊर्जा का संचार किया। 1910 में उन्होंने इलाहाबाद में 'भारत स्त्री महामंडल' की स्थापना की, जो महिलाओं का पहला अखिल भारतीय संगठन माना जाता है। 1917 में मांटैग्यू-चेम्सफोर्ड समिति के समक्ष महिला प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए सरला देवी ने महिलाओं के मताधिकार, स्त्री शिक्षा, विधवा संरक्षण और समान अधिकारों की जोरदार वकालत की।

7. स्वतंत्रता आंदोलन का महिला स्थिति पर सामाजिक प्रभाव एवं चेतना का प्रसार

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की इस व्यापक सहभागिता ने न केवल राजनीतिक स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि भारतीय समाज की आंतरिक संरचना और नारी की सामाजिक स्थिति में भी एक युगगांतकारी परिवर्तन लाया। सदियों से चली आ रही रूढ़िवादी मान्यताएँ, पर्दा प्रथा, बाल विवाह और स्त्री शिक्षा पर लगे प्रतिबंध स्वतः ध्वस्त होने लगे।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्रीमती ग्रे ने इस क्रांतिकारी परिवर्तन का वर्णन करते हुए लिखा है: 'करीब बीस वर्ष (1921-41) के काल में भारतीय नारी घोर उदासीनता के स्तर से उठकर उत्साहवर्धक प्रवृत्ति में प्रविष्ट हुई और एक नागरिक के तौर से उनके भी कुछ कर्तव्य है ऐसी भावना जागृत हुई। इसके अनेक उदाहरणों में से एक है: बम्बई में जिन महिलाओं को रास्ते तक ज्ञात न थे, जिन्होंने बम्बई के चारों ओर फैले हुए समुद्र की सैर तक नहीं की थी, ऐसी महिलाएँ देशसेविका बनीं, जुलूसों में शामिल होने लगीं, शराब की दुकान पर धरना देने लगीं और उन्होंने करीब तीस घंटे तक ट्राम की पटरी पर धरना देकर यातायात बंद करवा दिया।'

राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में गठित विभिन्न महिला संगठनों—जैसे ऑल इंडिया वूमैन्स कॉन्फ्रेंस (AIWC - 1927), देश सेविका संघ, नारी सत्याग्रह समिति, महिला राष्ट्रीय संघ, लेडीज पिकेटिंग बोर्ड, स्त्री स्वराज्य संघ और अखिल भारतीय महिला फेडरेशन ने महिलाओं में आत्मसम्मान, विधिक अधिकारों के प्रति जागरूकता, नेतृत्व क्षमता और

स्वतंत्र सोच का विकास किया। इसके फलस्वरूप, स्वाधीनता संग्राम के दौरान ही महिलाओं ने यह अनुभव कर लिया था कि उनका जीवन केवल घरेलू दायित्वों तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में उनकी बराबर की जिम्मेदारी है।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

संक्षेप में, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान केवल एक पूरक सहभागिता नहीं थी, बल्कि यह आंदोलन की एक मुख्यधारा और उसकी नैतिक शक्ति थी। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में बेगम हजरत महल और रानी लक्ष्मीबाई के सैन्य नेतृत्व से शुरू हुआ यह सफर 20वीं सदी में स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा, क्रांतिकारी गतिविधियों और भारत छोड़ो आंदोलन के माध्यम से एक जन-क्रांति में बदल गया।

भारतीय विदुषियों और साधारण नारियों ने अपनी अद्वितीय देशभक्ति, त्याग, सहनशीलता और वीरता से विश्व इतिहास में एक नया अध्याय लिखा। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं द्वारा प्रदर्शित इसी अभूतपूर्व क्षमता और योगदान को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 के तहत बिना किसी लिंग भेद के महिलाओं को पुरुषों के समान मौलिक अधिकार, मताधिकार और सामाजिक-राजनीतिक समानता की पूर्ण गारंटी प्रदान की।

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं के इस ऐतिहासिक उत्थान ने आधुनिक भारत में महिला सशक्तिकरण की सुदृढ़ नींव रखी। आज जब हम एक विकसित और समावेशी भारत के निर्माण की ओर अग्रसर हैं, तो स्वतंत्रता संग्राम की इन वीरांगनाओं और विदुषियों का त्याग, अदम्य साहस और आदर्श मार्गदर्शक बनकर देश की भावी पीढ़ियों को निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

9. संदर्भ सूची (References / Bibliography)

प्रस्तुत शोध पत्र की तैयारी में निम्नलिखित प्रामाणिक प्राथमिक एवं द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों का संदर्भ लिया गया है:

- [1] अग्रवाल, डॉ. चन्द्रमोहन, 'नारी व समाज', बंगाल ग्रंथ भंडार, कलकत्ता, पृ.सं. 100-103.
- [2] अग्रवाल, डॉ. शारदा, 'आधी आबादी का यथार्थ भारतीय नारी', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 88-93.
- [3] अंसारी, प्रो. इशरत हुसैन एवं डॉ. कुरैशी, एच.ए., '1857 उर्दू सोर्सेस (ट्रांसलेशन्स)', लखनऊ, पृ.सं. 41-51.
- [4] कौर, मनमोहन, 'रोल ऑफ वीमेन इन द फ्रीडम स्ट्रगल ऑफ इण्डिया', अमर प्रकाशक, दिल्ली, पृ.सं. 51-97.
- [5] कुमार, राधा, 'स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800-1990)', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 13-163.
- [6] गांधी, एम.के., 'अनशन और सत्याग्रह में नारी' (संपादित संकलन), अहमदाबाद, पृ.सं. 94-95.
- [7] चक्रवर्ती, उमा, 'कंडीशंस ऑफ बंगाली वीमेन एराउंड द सेकंड हाफ ऑफ द नाइंटीथ सेंचुरी', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 128-139.
- [8] चट्टोपाध्याय, कमलादेवी, 'इंटरव्यू', नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी (NMML) ओरल हिस्ट्री सेक्शन, नई दिल्ली, पृ.सं. 72-73.

- [9] जोन्स, फैनेथ, 'आर्य धर्मा: हिंदू कॉन्शियसनेस इन नाइंटींथ सेंचुरी पंजाब', यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, पृ.सं. 259.
- [10] नागोरी, डॉ. एम.एल. एवं नागोरी, जीतेश, 'भारतीय इतिहास कोश', स्ट्रलिंग पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृ.सं. 70, 181, 387, 401-406.
- [11] भार्गव, डॉ. वी.एस., 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, पृ.सं. 121-123, 192.
- [12] माहेश्वरी, अविनाश, 'महिला अधिकार और कानून', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 19-21.
- [13] मिर्जा, प्रभावती, 'इंटरव्यू', नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी (NMML) ओरल हिस्ट्री सेक्शन, पृ.सं. 5-14.
- [14] सारस्वत, स्वप्निल, 'भारतीय राजनीति और महिलाएँ', साहित्य भवन, आगरा, पृ.सं. 16-39.
- [15] सान्याल, डॉ. रत्ना राय, 'इन सर्च ऑफ न्यू वोमेन ऑफ नार्थ बंगाल फ्रॉम स्वदेशी टू तेभागा (1905-1947)', दि क्वाटरली रिव्यू ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, वाल्यूम XIV, पृ.सं. 121-125.
- [16] सीतारमैया, डॉ. पट्टाभि, 'दि हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस', खण्ड-1 व 2, पदम पब्लिकेशंस, बम्बई, पृ.सं. 131, 627.
- [17] सरकार, सुमित, 'मॉडर्न इण्डिया (1885-1947)', मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ.सं. 112, 151, 205, 271, 286, 311, 431.
- [18] सरकार, तानिका, 'पोलिटिक्स एंड वीमेन इन बंगाल: द कंडीशंस एंड मीनिंग ऑफ पार्टीसिपेशन', IESHR, वर्ष 21, अंक 1, 1984, पृ.सं. 92.
- [19] सहगल, मनमोहिनी, 'इंटरव्यू', नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी (NMML) ओरल हिस्ट्री सेक्शन, पृ.सं. 54.
- [20] शर्मा, रोमी, 'भारतीय महिलाएं: नई दिशाएं', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 25-32.